विदेश नीति

भारतीय विदेश नीति के विशिष्ट आयाम

पुष्पेन्द्र कुमार मिश्र

Scanned by TapScanner

Published by

HSRA Publications 2020
#02, Sri Annapoorneshwari Nilaya, 1st Main,
Byraveshwara Nagar, Laggere,
Bangalore – 560058

Sales Headquarters – Bangalore

Copyright © PUSHPENDRA KUMAR MISHRA 2020

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the respective authors. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the editors, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Authors of the respective chapters of this book is solely responsible and liable for its content.

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, transmitted or stored in any digital or Electronic form . Also

अध्याय: 06

भारत की विदेश नीति और दक्षिण एशिया

– डॉ. श्रद्धा गर्ग

विदेश नीति एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जहाँ विभिन्न कारक भिन्न–भिन्न स्थितियों में अलग–अलग प्रकार से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। भारत की विदेश नीति का सम्बन्ध उसकी सभ्यता की परम्परा, भूराजनैतिक स्थिति, उसकी मिश्रित संस्कृति, देश की सामूहिक अवचेतना और इसके शासकीय नेताओं की नीतियों एवं कार्यक्रमों से रहा है।

भारतीय सभ्यता ने हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख, इस्लाम व ईसाइयत के माध्यम से विश्व जगत को प्रभावित किया है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों में भारतीय नेताओं के बीच उपनिवेशवाद ने एक सामंजस्यहीन दृष्टिकोण में योग दिया है। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली तो भारत की विदेश नीति की प्रारंभिक अवस्था ने उपनिवेशवाद की कड़ी निंदा की। द्वितीय विश्वयुद्ध के तुरन्त बाद शीत युद्ध के उदय से विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण हो गया। उस समय भारत की विदेश नीति का प्रमुख उपकरण "गुटनिरेपक्ष आंदोलन" था जिसने भारत को बिना अपनी पहचान खोए एवं स्वतंत्र विदेश नीति के साथ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने और घरेलू विकास कार्यों में ध्यान देने में समर्थ बनाया। समकालीन वर्षों में भारत प्रमुख रूप से अपनी अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास के कारण वैश्विक मामलों में आकर्षण का केन्द्र बन गया है। अतः 21वीं शताब्दी में भारत को एक ऐसी विदेश नीति अपनाने की जरूरत है, जो उसे विकासशील देशों में एक उभरती हुई शक्ति और एक परमाणु सम्पन्न राज्य के रूप में वैश्विक और प्रादेशिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह में मदद कर सके।

दक्षिण एशिया, भारत के प्रभाव का परम्परागत क्षेत्र रहा है, जहाँ भारत द्वारा बिना किसी संदेह के वैश्वीकरण की प्रक्रिया में जीवन के सभी क्षेत्रों से ऊपर उठकर बाहरी विश्व के साथ भारतीय सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी की गई। परन्तु वैश्वीकरण के आगमन के साथ दक्षिण एशिया में बाहरी शक्तियों के हितों में वृद्धि हो रही है। भारत के लिए यह सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण विषय है। अन्य देशों के